क्या लिखूँ, कैसे लिखूँ?

संदीप उनियाल
पुत्र श्री पी.के.उनियाल
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

प्रवाहिनी पत्रिका छप रही है,
पापा ने दिया यह समाचार।
बोले बेटा लिख डालो तुम,
इसमें आर्टिकल दो-चार ।।

पाकर आदेश पापा का,
मैं सोचने लगा दिन-रात।
क्या लिखूँ , कैसे लिखूँ?
कैसे बने यह बात ।।

कविता लिखूँ , कहानी लिखूँ,
या लिखूँ कोई लेख।
इसी सोच में बैठा मैं,
सिर तकिया पर टेक ।।

पूछा पापा विषय बताओ,
या कोई प्रसंग।
जिसे पढ़े मज़े से सब,
और न हो कोई तंग ।।

पापा बोले देखो बेटा,
दिमाग मेरा मत खाओ।
अनुवादक के बेटे हो तुम,
जरा खुद भी दिमाग लगाओ ।।

इन्हीं विचारों में खोकर,
जब दिमाग होने लगा भारी।
तब टूटे-फूटे इन शब्दों से,
मैंने यह कविता लिख डाली ।।